2 मई 2018, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

# जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 41, अंक : 3 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

मई (प्रथम), 2018 (वीर नि. संवत्-2544) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के निर्देशन में –

## सागर में पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

**सागर (म.प्र.) :** यहाँ सिटी रोड़, शंकर पैलेस में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के निर्देशन में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, अंकुर कॉलोनी मकरोनिया-सागर द्वारा आयोजित श्री 1008 महावीर दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव रविवार, दिनांक 15 अप्रैल से शुक्रवार 20 अप्रैल 2018 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के साथ अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के क्रमबद्धपर्याय के सन्दर्भ में 'गति अनुसार मति' विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, ब्र.महेन्द्रजी शास्त्री अमायन, ब्र. नन्हेभैया मोकलपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर आदि के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

महोत्सव ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री देवलाली के प्रतिष्ठाचार्यत्व, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के मंच संचालन एवं पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में संपन्न हुआ। सह-प्रतिष्ठाचार्य के रूप में पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सुबोधजी शाहगढ, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित प्रियंकजी शास्त्री रहली, पण्डित विवेकजी शास्त्री दलपतपुर, पण्डित रमेशजी सनावद आदि अनेक महानुभाव उपस्थित थे।

बालक वर्धमान के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती मीना-अशोककुमारजी समगोरया, सागर को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री रवीन्द्रकुमार-सरिता जैन (सुपुत्र-पुत्रवधु पण्डित कोमलचंदजी टडा), कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी पण्डित निर्मलकुमार-निर्मला जैन एवं यज्ञनायक-नायिका श्री गुलझारीलाल-सुषमा जैन मकरोनिया थे। प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री सुखदयालजी डेवडिया परिवार केसली ने, प्रतिष्ठा मंच का उद्घाटन श्री देवचन्द विजयकुमार (विजय फाउंड्री), खुरई ने एवं प्रतिष्ठा मंडप के जिनालय का उद्घाटन श्रीमती प्रमिलाजी मकरोनिया ने किया। महोत्सव का ध्वजारोहण श्रीमती सपना-प्रतीश जैन, पटना के करकमलों द्वारा किया गया।

दिनांक 17 अप्रैल को बाल तीर्थंकर का सौधर्मादि इन्द्रों के पश्चात् सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य श्री राजेन्द्रकुमार अतुलकुमार सतभैया, सागर को मिला। सायंकाल 40 फीट का कांच से बना विशाल पालना दर्शनीय रहा, जिसका उद्घाटन इंजी. संजीवकुमार समरकुमार जैन सागर ने किया एवं श्री प्रेमचंदजी ध्याताजी बजाज, कोटा का विशेष सराहनीय योगदान रहा। सर्वप्रथम आहारदान का सौभाग्य श्री राजकुमारजी गुलझारीलालजी कर्रापुरवाले मकरोनिया को मिला।

मूलनायक पार्श्वनाथ भगवान के भेंटकर्ता भाईजी श्री राजेन्द्रजी, इंजी.आनन्दजी, इंजी. विक्रमजी जैन (खुरई वाले) मकरोनिया एवं विराजमानकर्त्ता श्री अजितप्रसादजी वैभवजी-विदेहजी, दिल्ली थे। श्री वासुपूज्य भगवान के भेंटकर्ता सिंघई रतनचंदजी निर्मलजी राजेशजी सुनीलजी परिवार मकरोनिया एवं विराजमानकर्ता श्री रमेशचंदजी प्रमोद विवेक अविनाश जैन मोदी परिवार रहे। श्री सीमंधर भगवान के भेंटकर्ता श्री राजकुमारजी गुलझारीलालजी मकरोनिया एवं विधिनायक भगवान महावीर स्वामी के भेंटकर्ता मुमुक्षु मण्डल मकरोनिया व विराजमानकर्ता श्री महावीर जिनालय मुमुक्षु परिवार परकोटा सागर थे।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत 'कौण्डेश से कुन्दकुन्द' नामक नाटक का मंचन वीतराग-विज्ञान पाठशाला गुना द्वारा तपकल्याणक के दिन किया गया। संपूर्ण कार्यक्रम में देश-विदेश से पधारे लगभग 1 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। महोत्सव में सत्साहित्य व सैंकड़ों सी.डी./डी.वी.डी. घर-घर पहुंची।

महोत्सव को सफल बनाने में समिति के समस्त पदाधिकारियों और अनेक नगरों के मुमुक्षु मण्डल व युवा फैडरेशन के सदस्यों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। •

डॉ. भारिल्ल का नया प्रकाशन

**योगसार अनुशीलन**

पृष्ठ – 240 मूल्य – 25 रुपये

सभी साधर्मीजन अवश्य लाभ लेवें।

सम्पादकीय -

## ऐसे क्या पाप किये?

9

- पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

जीव जबतक अपने शुद्धस्वरूप में लीन नहीं रह सकता, उसको सर्वज्ञ परमात्मा की पूजा, भक्ति आदि का शुभभाव आये बिना नहीं रहता, किन्तु ज्ञानी समझते हैं कि ये शुभभाव भी पुण्यबंध के कारण हैं, उनका भी अभाव कर जब अपने शुद्धस्वरूप में लीनता करूँगा, तभी निश्चय भावपूजा होगी और यही धर्म है, इसलिए यही करनेयोग्य है।

यहाँ ज्ञातव्य है कि पूजा के सभी (अष्ट) द्रव्य तीनप्रकार के प्रतीक हैं - १. गुणों के प्रतीक, २. भोगों के प्रतीक और ३. आलम्बन के प्रतीक तथा जिसप्रकार जिनमन्दिर समवसरण का प्रतीकरूप है, जिनप्रतिमा अरहंत भगवान की प्रतीकरूप है, पुजारी स्वयं इन्द्र के प्रतीकरूप हैं, जिसप्रकार इन सबमें स्थापना निक्षेप से ऐसा प्रतीकरूप व्यवहार होता है, उसीप्रकार अष्टद्रव्य में भी स्थापना निक्षेप से जल में क्षीरसागर के जल की स्थापना कर ली जाती है, उज्ज्वल धुले चावलों में अक्षत की स्थापना एवं केशर से रंगे चावलों में पुष्पों की तथा चन्दन के ताजे बुरादे में ही धूप की स्थापना की जाती है, क्योंकि किसी भी प्रकार की हिंसोत्पादक सामग्री से पूजा नहीं की जाती।

**पूजा का उद्देश्य -** १. वीतरागी देव की सच्ची पूजा की सार्थकता सर्वप्रकार से रागादि भावों का आदर छोड़कर वीतरागी बनने में है।

२. सर्वज्ञ की सच्ची पूजा अल्पज्ञ पर्याय का आदर छोड़कर सर्वज्ञता प्रकट करने में है।

३. वीतरागी प्रभु की सच्ची प्रभुता प्राप्त करने में है। यही पूजा का उद्देश्य है और इसी में पूजा की सफलता व सार्थकता है।

**२. गुरूपासना -** गुरु शब्द का अर्थ महान होता है। लोक में अध्यापकों को गुरु कहते हैं। माता-पिता भी गुरु कहलाते हैं; परन्तु धार्मिक प्रकरण में आचार्य, उपाध्याय व साधु ही गुरु हैं; क्योंकि वे जीवों को उपदेश देकर अथवा बिना उपदेश दिए ही केवल अपने जीवन का दर्शन कराकर कल्याण का वह मार्ग बताते हैं, जिसे पाकर जीव सदा के लिए कृतकृत्य हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त विरक्त चित्त सम्यक दृष्टि श्रावक भी उपर्युक्त कारणवश ही गुरु-संज्ञा को प्राप्त होते हैं। परम गुरु, दीक्षा गुरु, शिक्षा गुरु आदि के भेद से भी गुरु कई प्रकार के होते हैं।

आचार्य जयसेन ने प्रवचनसार की तात्पर्य टीका में स्पष्ट उल्लेख किया है कि ''अनन्त ज्ञानादि महान गुणों के द्वारा जो तीनों लोकों में महान हैं वे भगवान अरहंत त्रिलोक गुरु हैं।''

आचार्य उपाध्याय व साधु सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान व सम्यक्चारित्र गुणों द्वारा बड़े हैं अतः गुरु हैं। इस प्रकार जो साधु तप शील संयम में श्रेष्ठ व २८ मूलगुणों के धारक हैं वे साक्षात् गुरु हैं।

उपकारीजनों को भी गुरु माना गया है। हरिवंश पुराण में लिखा है - ''उस रत्नद्वीप में जब चारण ऋद्धिधारी मुनिराज के समक्ष चारुदत्त आदि बैठे थे तब स्वर्गलोक से दो देव आये; जिन्होंने मुनि के पहले चारुदत्त को नमस्कार किया तो पूछा कि हे देवो! तुम दोनों ने मुनिराज को छोड़कर श्रावक को पहले नमस्कार क्यों किया? देवों ने इसका कारण कहा कि इन चारुदत्त ने हम दोनों को जिन धर्म का उपदेश दिया है, इसलिए ये हमारे साक्षात गुरु हैं।''

श्रावक के षट् आवश्यकों में गुरूपासना दूसरा आवश्यक कर्तव्य है। उपर्युक्त पंच परमेष्ठी स्वरूप गुरुओं की यथायोग्य विनय आदर सत्कार अथवा भक्ति पूजादि करना गुरूपासना है। सम्यग्दर्शन 'ज्ञान' चारित्रादि की प्राप्ति में सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र के धारक पूज्य पुरुषों की विनय-भक्ति ही सच्चे निमित्त हैं। जब विषयाभिलाषियों को विषय सामग्री जुटाने की क्रिया बुद्धिपूर्वक प्रयत्नपूर्वक देखी जाती है तो आत्माभिलाषियों द्वारा यह काम प्रयत्नपूर्वक क्यों नहीं किया जाना चाहिए, करना ही चाहिए।

यहाँ ज्ञातव्य है कि यदि हम मुनियों (गुरुओं) का सच्चा स्वरूप ही नहीं जानेंगे तो सच्ची भक्ति कैसे होगी? अतः सच्ची गुरु भक्ति के लिए सच्चे गुरु का यथार्थ स्वरूप जानना भी अति आवश्यक है। (क्रमशः)

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

## 41वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

**(रविवार, दिनांक 12 अगस्त से मंगलवार 21 अगस्त, 2018 तक)**

**शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल एवं अन्य अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।**

**शिविर में जयपुर आने हेतु अपने टिकिट शीघ्र करा लेवें। कृपया आवास आदि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने पधारने की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।**

**संपर्क सूत्र –** पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन : 0141-2705581, 2707458

**विशेष ध्यान दें! - यह शिविर उपरोक्त तिथियों में जयपुर में संपन्न होना निश्चित है, अत: कोई भी किसी भी प्रकार के भ्रम में न रहे!**

## बाल एवं युवा संस्कार शिविर संपन्न

**दाहोद (गुज.) :** यहाँ नया महावीर मंदिर में दिनांक 14 से 18 अप्रैल तक बाल एवं युवा संस्कार शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री, पण्डित समकितजी शास्त्री, पण्डित प्रतीकजी शास्त्री द्वारा प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त प्रात:काल जिनेन्द्र-पूजन, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में वीतराग-विज्ञान महिला मंडल व पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

दिनांक 17 अप्रैल को सायंकाल गुरुदेवश्री की जन्मजयंती के अवसर पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें पाठशाला के बच्चों द्वारा अत्यंत सुन्दर व रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। शिविर में लगभग 150 बच्चों के अतिरिक्त 250 साधर्मियों ने लाभ लिया।

स्थानीय विद्वान के रूप में पण्डित राकेशजी शास्त्री व पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री का विशेष सहयोग रहा।

## वैराग्य समाचार

**(1) ग्वालियर (म.प्र.) निवासी श्री शांतिलालजी जैन (काला) भिण्ड वालों** का दिनांक 15 अप्रैल को शांतपरिणामों से देहावसान हो गया।

**(2) टीकमगढ (म.प्र.) निवासी श्रीमती पुष्पा जैन** धर्मपत्नी श्री ज्ञानचन्द्र जैन का दिनांक 2 अप्रैल को 67 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में ज्ञानपुष्प परिवार की ओर से जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 500-500/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

## कार्यकारिणी मीटिंग संपन्न

**इन्दौर (म.प्र.) :** यहाँ रवीन्द्र नाट्य गृह में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, छत्तीसगढ की प्रांतीय कार्यकारिणी सभा का दिनांक 8 अप्रैल को आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री अशोकजी जैन 'अरिहंत कैपिटल' ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री जयजी एवं विजयजी जैन इन्दौर, विशिष्ट अतिथि श्री मनोजजी बंगेला सागर, श्री सुनीलजी सर्राफ सागर, श्री पदमजी पहाड़िया इन्दौर एवं श्री अशोकजी जैन भोपाल थे।

इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर, प्रदेश उपाध्यक्ष श्री विकासजी मोदी सागर, विद्वत्वर्ग में पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर, डॉ. मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय' विदिशा, इन्दौर शाखा के अध्यक्ष श्री संजयजी कागदी उपस्थित थे।

सभा में श्री पुष्पेन्द्रजी जैन ने छत्तीसगढ में फैडरेशन शाखाओं की संख्या व उनके कार्यों के बारे में जानकारी दी एवं शाखाओं को बढाने संबंधी अपने विचार प्रस्तुत किये। साथ ही श्री संजयजी सिद्धार्थ इन्दौर, श्री अनुभवजी जबलपुर, श्री ज्ञाता सिंघई सिवनी, पण्डित कमलेशजी टीकमगढ, श्री अनुभवजी करेली, श्री अशोकजी मांगुलकर व गणमान्य अतिथियों ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किये। सभा में मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ के लगभग 65 सदस्यों की उपस्थिति रही।

सभा का संचालन पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री ग्वालियर व श्री पुष्पेन्द्रजी जैन भिण्ड ने किया।

जन्म दिवस, जन्मोत्सव, पारिवारिक कार्यक्रम
बाल शिविर आदि में वितरण के लिये सर्वोत्तम उपहार
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउण्डेशन, जबलपुर की नवीन प्रस्तुति
27वां पुष्प
माँ सुनाओ मुझे वो कहानी

आध्यात्मिक लोरी गीतों का अनुपम वीडियो संग्रह

बालवर्ग धार्मिक संस्कार प्रेरक 28वाँ पुष्प
हमारी प्यारी पाठशाला

16 धार्मिक एवं शिक्षाप्रद बाल कविताओं का एनिमेशन वीडियो

बालवर्ग धार्मिक संस्कार प्रेरक 29 वाँ पुष्प
Puzzle Game

जिनधर्म की डगर पे
जोड़ो, पढ़ो और सीखो (Collect, Read & Learn)
3 पौराणिक जैन कथाओं पर आधारित सुंदर खेल
निर्देशन एवं परिकल्पना - विराग शास्त्री, जबलपुर Mob.9300642434
ईमेल - kahansandesh@gmail.com

### एक मोक्षार्थी की पूर्व भूमिका (14)

### हमारा वर्तमान आचरण मात्र हमारे आज को ही प्रभावित नहीं करता है वरन्

# हमारा सदाचार हमारे आगामी अनन्तकाल का नियामक (Controlar) है

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

जैन श्रावक के जीवन में सामान्य सदाचार तो सहज ही पाया जाता है। उसके जीवन में अष्टमूलगुणों का सद्भाव सहज ही पाया जाता है तथा सप्तव्यसनादिक की प्रवृत्ति तो पाई ही नहीं जाती है।

मांसभक्षण या मदिरापान में तीव्र गृद्धता और कषायों की तीव्रता (परिणामों में क्रूरता) होने से जिनवाणी के श्रवण हेतु आवश्यक विशुद्धि का अभाव होता है, उसे जिनवाणी का श्रवण दुर्लभ तथा समझ पाना (स्वीकृत होना) लगभग असंभव ही होता है।

जी हाँ! आचरण और व्यवहार में सात्विकता तथा जिनवाणी के मर्म को समझ पाने की क्षमता का विकास एक दूसरे की मदद से साथ-साथ समानांतर तौर पर होता है। यदि इस कथन को स्पष्ट किया जाये तो कहा जा सकता है कि जैसे-जैसे आचरण और व्यवहार में सात्विकता और निर्मलता आती है वैसे-वैसे जिनवाणी श्रवण के अवसर और उसे समझने की पात्रता बढती जाती है और जैसे-जैसे जिनवाणी का अध्ययन-मनन और चिन्तवन बढता जाता है वैसे-वैसे हमारे आचरण और व्यवहार में पवित्रता आती जाती है।

ध्यान रहे कि उक्त कथन सम्यग्दर्शन से पूर्व श्रावक के जीवन में पाये जाने वाले सदाचार की मुख्यता से है।

सामान्यजन के भोजन में पेट भरने के अतिरिक्त स्वाद के भोग की प्रधानता होती है। यदि सामान्य बोलचाल की भाषा में बात की जाये तो कहा जा सकता है कि सामान्यजन 'खाने के लिये जीते हैं, वे मात्र जीने के लिये नहीं खाते हैं'। ऐसे लोग स्वाद के आनन्द के लोभ में, भक्ष्याभक्ष्य का विचार किये बिना, हिंसक-अहिंसक भोजन का विचार किये बिना, कुछ भी खाते हैं, कभी भी खाते हैं, कहीं भी खाते हैं।

जिनवाणी के अध्ययन के फलस्वरूप गृद्धता की कमी हो जाने से अब उनका भोजन जीवन के लिये होने लगता है। इसका मतलब यह नहीं कि इस अवस्था में भोजन का स्वाद उनके लिये कोई मायने ही नहीं रखता है या वे उस ओर ध्यान ही नहीं देते हैं। उनका भोजन स्वादिष्ट भी होता है और जीवन के लिये आवश्यक सभी प्रकार के पौष्टिक तत्त्वों से भरपूर भी पर भक्ष्यपदार्थों की मर्यादा के अनुरूप।

जिनवरकथित चरणानुयोग के ग्रंथों के अभ्यास से जब विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों या अन्यान्य भोज्यसामग्री तथा भोगसामग्री में विद्यमान जीवराशि और भोजन के रूप में उसके ग्रहण तथा सेवन के फलस्वरूप होने वाली हिंसा का ज्ञान होता है तो सात्विकवृत्ति के धारक यह मंदकषायी जीव उक्त अभक्ष्य (अखाद्य) खाद्यसामग्री से स्वत: ही विमुख हो जाता है। ऐसा जीव अपनी तत्कालीन भूमिकानुसार निर्दोष या अपेक्षाकृत अल्पदोषयुक्त भोजन ग्रहण करके ही अपना जीवन व्यतीत करता है।

उक्त प्रकार के जीव मात्र खाद्यसामग्री के चुनाव में ही नहीं वरन उसके रखरखाव में और उससे भोजन बनाने की प्रक्रिया में भी सावधानीपूर्वक उपयुक्त विधि अपनाकर उसे निर्दोष बनाए रखने का उपक्रम करते हैं। वे ऐसे मर्यादित समय में ही उसका उपयोग करते हैं, जिसमें वह दूषित न हो जाये।

हालांकि भोजनग्रहण की उक्त प्रक्रिया समय और श्रमसाध्य है तथा इसप्रकार विचार करने पर जगत में प्रचलित भोज्यसामग्री में से बहुत ही कम पदार्थ भोजन के योग्य रह जाते हैं तथापि वे जीवनरक्षा और जीवन में सम्पूर्णता बने रहने के लिये पर्याप्त हैं। उक्त भोजन सामग्री में जीवन के लिये आवश्यक सभी तत्त्व प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं।

उक्त प्रकार से भोजनादिक की मर्यादा का पालन करने से हम सभी लोग जगत के उन सभी लोगों की संगति से सहज ही बच जाते हैं, जिन्हें भक्ष्य-अभक्ष्यादिक का कोई विचार ही नहीं है।

उक्त प्रक्रिया में सहज ही समान लक्ष्य, विचारधारा, रुचि और आचरण वाले ऐसे लोगों का एक समाज निर्मित हो जाता है जो हम सभी की भूमिका के योग्य उपयुक्त सभी सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति तो करता ही है, साथ ही साथ हमें उन दोषों से बचाए रखता है जो अन्य रुचि व आचरण वाले लोगों के समागम होने पर सहज ही हमारे व्यक्तित्व में, हमारे जीवन में प्रवेश कर सकते थे।

इसप्रकार हम पाते हैं कि हमारे खानपान की शुद्धता हमें मात्र भोजन संबंधी हिंसा से ही नहीं बचाती है वरन् वह हमें ऐसे लोगों की संगति से भी बचाती है जिनका साथ कदाचित हमें गुमराह कर सकता था, हमें अपने कल्याण के मार्ग से च्युत कर सकता था।

हमारे जैसी भूमिका के लोग इस मायने में बहुत कमजोर होते हैं कि हमारे ऊपर हमारे आसपास के वातावरण का बहुत प्रभाव पड़ता है। जिस प्रकार कमजोर शारीरिक स्वास्थ्य (कमजोर प्रतिरोधक क्षमता) वाले लोगों को वायुमंडल में व्याप्त इन्फेक्शन आसानी से लग जाते हैं, उसी प्रकार कमजोर मानसिक स्वास्थ्य वाले लोगों को भी समाज में

व्याप्त प्रदूषण आसानी से अपनी गिरफ्त में ले लेता है। यदि हम सात्विक समाज के बीच रहते हैं तो उस सात्विक समाज की परम्परा, सामाजिक दबाव, प्रेरणा एवं उनके बीच विशिष्ट बने रहने की होड़ हमें अपने मार्ग से विचलित नहीं होने देती। यदि कभी किसी तात्कालिक, क्षणिक कमजोरीवश कोई व्यक्ति अपने पथ से विचलित होने लगता है तो उक्त सात्विक समाज निश्चित ही उसके स्थितिकरण में निमित्त बनता है।

सामान्यत: उक्त प्रकार के सात्विक आचरण वाले लोगों की जीवनशैली भी अन्य लोगों से पृथक् होती है। ऐसे लोग अपना समय देवदर्शन-पूजनादिक में और स्वाध्यायादिक में व्यतीत करते हैं। आपस में तत्संबंधी ही चर्चा (तत्त्वचर्चा) करते हैं। यदि भ्रमण पर जाने की इच्छा हो तो तीर्थयात्रा पर जाने का कार्यक्रम बनाते हैं।

आपसी होड़ (प्रतिस्पर्धा) मानवस्वभाव की कमजोरी है। प्रत्येक व्यक्ति अन्य से विशिष्ट व आगे दिखने के लिये अन्यों से होड़ करता है। व्यसनी समाज के बीच होड़ व्यसनों की होगी और सात्विक समाज के सदस्यों के बीच स्पर्धा होगी तो सात्विकता की होगी। जैसे कि दूसरे लोग तो प्रतिदिन मात्र एक घंटे स्वाध्याय करते हैं, मैं तो 2 घंटे स्वाध्याय करता हूँ। वे तो दिन में एक बार ही मंदिर जाते हैं, मैं तो दो बार मंदिर जाता हूँ। और सब तो एकाशन करते हैं पर मैं तो उपवास करता हूँ, दूसरे लोग तो मात्र स्वयं का स्वाध्याय करते हैं पर मैं तो अन्यों के लिये प्रवचन भी करता हूँ, आदि-आदि।

यदि हम सात्विक जीवन जीने वाले आत्मार्थियों की जगह अन्य लोगों के बीच रहेंगे, उनकी संगति करेंगे तो हमारी स्पर्धा उनसे होगी, भोगी लोगों के बीच स्पर्धा भोगों की होगी। तेरी साड़ी सूती है, मैं तो रेशम के सिवाय कुछ पहनती ही नहीं। तेरी कार 10 लाख की है, मेरी तो 20 की है, तू ये ब्रांड पीता है, मैं तो वह ब्रांड पीता हूँ, तू शिमला जा रहा है, मैं तो स्विट्जरलैण्ड जा रहा हूँ, क्या! तू रोज अपनी शाम मंदिर में बिताता है, मैं तो क्लब जाता हूँ, आदि-आदि।

इसप्रकार हम पाते हैं कि हमारा खानपान, आचरण और व्यवहार यह सुनिश्चित करता है कि हमारी संगति कैसी होगी, समाज कैसा होगा। फिर हमारी संगति यह सुनिश्चित करती है कि हम कैसा जीवन जीयेंगे, इस जीवन में हम किस दिशा में आगे बढेंगे।

जीवन की दिशा मात्र हमारे इसी जीवन को नहीं बल्कि आगामी अनन्त भवों और हमारे भावी अनन्तकाल को प्रभावित करेगी।

तात्पर्य यह है कि हमारा आज का खानपान और आचरण मात्र आज की साधारण तात्कालिक घटना नहीं है वरन यह हमारी आगामी अनंतकाल की दिशा का निर्धारण करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक (Fector) है। हमें इस तथ्य को ध्यान में रखकर ही अपना आचरण व व्यवहार सुनिश्चित करना चाहिये।

**समयसार महामंडल विधान संपन्न –**

# डॉ. हुकमचंद भारिल्ल सोलापुर में

**सोलापुर (महा.) :** यहाँ णमोकार स्वाध्याय मंडल एवं गांधीनाथा रंगजी दिगम्बर जैन जनमंगल प्रतिष्ठान के तत्त्वावधान में दिनांक 25 से 30 अप्रैल तक डॉ. भारिल्ल द्वारा रचित समयसार मंडल विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** द्वारा समयसार विधान की जयमाला पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही ब्र. जीतूभाई चंकेश्वरा अकलूज, ब्र. वीतरागभाई दोशी अकलूज एवं ब्र. सुजाताताई रोटे बाहुबली द्वारा भी प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त जुलूस, इन्द्रसभा, कुन्दकुन्द आचार्य पर चित्रपट दिखाना, संगीतमय कथा प्रस्तुति आदि कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में लगभग 1000-1500 साधर्मियों ने लाभ लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल द्वारा पण्डित दीपकजी धवल भोपाल व पण्डित विक्रांतजी शास्त्री सोलापुर के सहयोग से संपन्न हुये।

## डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

| | | |
|---|---|---|
| **1 से 6 मई** | **सूरत** | **समयसार विधान** |
| **20 मई से 6 जून** | **द्रोणगिरि** | **प्रशिक्षण शिविर** |
| **8 जून से 9 जुलाई** | **विदेश** | **तत्त्वप्रचारार्थ** |
| **12 से 21 अगस्त** | **जयपुर** | **महाविद्यालय शिविर** |

# ज्ञानस्वभाव पर विशेष संगोष्ठी

**सागर (म.प्र.) :** यहाँ पंचकल्याणक के अवसर पर केवलज्ञान कल्याणक के दिन दोपहर में 'ज्ञानस्वभाव' विषय पर दिल्ली निवासी श्री अजितप्रसादजी की अध्यक्षता में विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस गोष्ठी में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने ज्ञान का सामान्य स्वरूप, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने ज्ञान के भेद-प्रभेद व उपयोगिता तथा डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर ने केवलज्ञान व श्रुतज्ञान में समानता विषय पर विचार प्रस्तुत किये। मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित प्रो. ए.डी. शर्मा (हरिसिंह गौड़ केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर) ने ज्ञान-ज्ञेय मीमांसा पर दार्शनिक विश्लेषण प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का संचालन पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर ने किया।

**पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–**
**वेबसाईट – www.vitragvani.com**
**संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई**
**Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com**

... तथा राग-द्वेष-मोहरूप जो आस्रव हैं, उनका तो नाश करने की चिन्ता नहीं और बाह्य क्रिया अथवा बाह्य निमित्त मिटाने का उपाय रखता है, सो उनके मिटाने से आस्रव नहीं मिटता।

**– मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 227**

## टोडरमल स्मारक में गुरुदेव जयंती

**जयपुर (राज.) :** यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 22 अप्रैल को गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की जन्मजयंती के उपलक्ष्य में विशेष गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने की।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल थे, जिन्होंने गुरुदेवश्री की अनेक घटनाओं का स्मरण करते हुए उनके द्वारा उद्घाटित तत्त्वज्ञान व उसके विश्वव्यापी प्रचार-प्रसार में उनके विशेष प्रभाव पर विस्तार से प्रकाश डाला। डॉ. भारिल्ल के अतिरिक्त मंचासीन ब्र. यशपालजी जैन, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री ताराचंदजी सौगानी, श्रीमती कमला भारिल्ल, कु.प्रतीति पाटील ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर शुभांशु जैन ने काव्य पाठ किया। सभा का मंगलाचरण समकित जैन एवं संचालन जिनकुमार शास्त्री ने किया।

## गुरुदेव जयंती पर विशेष सभा

**सागर पंचकल्याणक** के अवसर पर जन्मकल्याणक के दिन दिनांक 17 अप्रैल को सायंकाल आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की जन्मजयंती के उपलक्ष्य में विशेष सभा का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की।

सभा में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. महेशजी शास्त्री भोपाल, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर आदि ने गुरुदेवश्री के जीवन व तत्त्वज्ञान के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला। ब्रह्मचारी बहनों ने एवं पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल ने गुरुदेवश्री के जीवन से संबंधित गीत प्रस्तुत किया। अन्त में पूरे एक घंटे के अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. भारिल्लजी ने उनके उपलब्ध 9000 प्रवचनों को महान आध्यात्मिक निधि बताते हुए उन्हें वर्तमान युग में प्रतिदिन सैंकड़ों स्वाध्याय सभाओं में सुने जाने वाले सबसे अधिक प्रभावक व्यक्तित्व बताया।

सभा का संचालन संयमजी शास्त्री नागपुर एवं आभार प्रदर्शन पण्डित अरुणजी मोदी सागर ने किया।

## शांतिविधान एवं प्रवचन संपन्न

**टीकमगढ (म.प्र.)** में दिनांक 15 अप्रैल को श्री अरविन्दजी शास्त्री एवं श्री संजयजी 'हल्ले' की माताजी के देहावसान के प्रसंग पर शांतिविधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के प्रवचन का लाभ मिला। विधान के समस्त कार्य डॉ. गोधा के निर्देशन में पण्डित राजेन्द्रजी एवं पण्डित सम्मेदजी टीकमगढ के सहयोग से संपन्न हुये।

## सोश्यल मीडिया द्वारा तत्त्वप्रचार

**समयसार पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचन**
**अब WhatsApp पर भी उपलब्ध हैं।**

**7297973664**

को अपने मोबाईल में PTST प्रवचन के नाम से SAVE करें।
अपना नाम एवं स्थान लिखकर 7297973664 पर WhatsApp करें।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की सभी गतिविधियों की जानकारी आप हमारे facebook पेज pandit todarmal smarak trust के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।
www.facebook.com/ptst.jaipur

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की सभी गतिविधियों की जानकारी एवं सत्साहित्य का ऑनलाईन ऑर्डर देने हेतु visit करें –
www.ptst.in

श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित नियमित कक्षाओं एवं प्रवचनों को आप USTREAM के माध्यम से लाईव देख सकते हैं।
www.ustream.tv/channel/ptst

श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित नियमित कक्षाओं एवं प्रवचनों का लाभ आप हमारे YouTube चैनल PTST के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।
www.youtube.com/user/todarmalsmaraktrust

जैनधर्म को प्रारम्भ से सीखने अथवा और भी विविध विषयों को डॉ. संजीवकुमार गोधा द्वारा YouTube पर सुनने के लिये निम्न लिंक का प्रयोग करें –
www.youtube.com/c/drsanjeevgodha

**प्रकाशन तिथि : 28 अप्रैल 2018**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

*यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –*
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
**फोन :** (0141) 2705581, 2707458
**E-Mail :** ptstjaipur@yahoo.com